संपादकीय

आर्थिक आपातकाल के आसार

क्या भारत आर्थिक संकट की ओर बढ़ रहा है? क्या आर्थिक आपातकाल के आसार हैं और भारत सरकार कुछ कड़े और बड़े फैसले ले सकती है? क्या कुछ पाबंदियां भी चस्पां की जा सकती हैं? क्या प्रधानमंत्री मोदी की अपील देश के आम आदमी के लिए ही है? नेताओं की जमात के लिए 'बचत' अपरिहार्य क्यों नहीं है? हमने प्रधानमंत्री की अपील और हिदायतों का विश्लेषण किया था। उसका दूसरा पक्ष यह है कि देश की आर्थिक सेहत का मूल्यांकन करने वाली संस्थाओं-रिजर्व बैंक, मूडीज, एसएंडपी, विश्व बैंक, फिच और एशियन डवलपमेंट बैंक-ने भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की विकास दर घटा दी है। जाहिर है कि हमारी अर्थव्यवस्था में संकुचन आया है। वैसे भी भारत अब विश्व की चौथी नहीं, छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसमें और भी गिरावट के आसार हैं। यह मूल्यांकन आसन्न आर्थिक संकट का पहला संकेत है। खुद प्रधानमंत्री ने माना है कि कोरोना महामारी वैश्विक संकट थी, तो ईरान युद्ध इस दशक का सबसे बड़ा संकट है। प्रधानमंत्री मोदी ने आर्थिक संकट और पेट्रो उत्पादों की कमी के कारण देश से अपील नहीं की है। वह न ही किसी तरह के 'दान' के पक्ष में हैं, जैसा कि जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री कालों के दौरान किया गया था। प्रधानमंत्री आयात कम करने के पक्षधर हैं, ताकि विदेशी मुद्रा को बचाया जा सके। ईरान युद्ध की शुरुआत में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 720 अरब डॉलर का था, लेकिन युद्ध के करीब 75 दिन के बाद यह भंडार घट कर 690 अरब डॉलर हो गया है, लिहाजा प्रधानमंत्री ने उन खर्चों को कम करने की अपील की है, जिनमें डॉलर खर्च करने पड़ते हैं। करीब 80 फीसदी कच्चे तेल और 70 फीसदी से अधिक सोने के आयात डॉलर में ही किए जाते हैं।

डॉलर के मुकाबले भारतीय मुद्रा 'रुपए' में 95.28 तक की ऐतिहासिक गिरावट ने संकट को गहरा दिया है। इस समय 'रुपया' दुनिया की दूसरी सबसे कमजोर मुद्रा है, जिसमें 12 फीसदी अवमूल्यन हुआ है। प्रधानमंत्री ने एक साल तक सोना न खरीदने की अपील की है, लेकिन भारत सरकार ने विदेशों से 168 टन सोना खरीदा है। अब भारत के पास सोने का कुल भंडार 880 टन का है। इसे 'राष्ट्रीय सुरक्षा' से जोड़ कर आंका जा रहा है। दरअसल हमारा बुनियादी सवाल सरकारी व्यवस्था और नेताओं की जमात से है। देश में प्रधानमंत्री, मंत्री, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री और आम अति विशिष्ट चेहरे भी लंबे-चौड़े काफिलों के साथ चलते हैं। यदि वाकई संकट के हालात हैं, तो मुख्यमंत्री और मंत्री सरकारी हेलीकॉप्टर पर सवार क्यों रहते हैं? क्या हवाई उड़ानें 'पानी' से चलती हैं? हमारे जन-प्रतिनिधि रेलगाड़ी के विशेष कक्ष में सफर क्यों नहीं कर सकते? यदि सार्वजनिक परिवहन नेताओं के लिए 'असुरक्षित' हैं, तो रेलवे में असंख्य यात्रियों की सुरक्षा दांव पर क्यों लगा रखी है? हम प्रधानमंत्री को अपवाद के तौर पर छोड़ देते हैं, क्योंकि वह देशहित में, देश के लिए ही, सर्वोच्च कार्यकारी अधिकारी के तौर पर 'विशेष वाहन' का इस्तेमाल करते हैं और अब मई में ही 5 देशों की यात्रा पर जाएंगे, लेकिन हम प्रधानमंत्री के 'रोड शो' पर सवाल और आपत्ति जरूर करेंगे।

वैश्विक संकट के बीच कूटनीतिक मिशन पर निकल रहे हैं मोदी

15 मई से 20 मई तक प्रस्तावित उनकी बहुराष्ट्रीय विदेश यात्रा के दौरान वह संयुक्त अरब अमीरात, नीदरलैंड, स्वीडन, नॉर्वे और इटली का दौरा करेंगे। यह यात्रा भारत की वैश्विक रणनीति, आर्थिक हितों और सामरिक साझेदारियों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल मानी जा रही है। इस दौरान ऊर्जा सहयोग, व्यापार, हरित प्रौद्योगिकी, रक्षा, निवेश, नवाचार और वैश्विक सुरक्षा जैसे अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होगी, जिससे भारत की अंतरराष्ट्रीय भूमिका और अधिक मजबूत होने की संभावना है।इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि भारत अपने पारंपरिक मित्र देशों के साथ केवल व्यापारिक संबंधों तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि वह प्रौद्योगिकी, हरित ऊर्जा, रक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, समुद्री सुरक्षा और वैश्विक आपूर्ति शृंखला जैसे क्षेत्रों में दीर्घकालिक रणनीतिक सहयोग को भी विस्तार देना चाहता है।

वैश्विक चुनौतियों, बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों, ऊर्जा संकट, आपूर्ति शृंखला की अनिश्चितताओं और तकनीकी प्रतिस्पर्धा के बीच भारत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फिर बड़े कूटनीतिक मिशन पर निकल रहे हैं। 15 मई से 20 मई तक प्रस्तावित उनकी बहुराष्ट्रीय विदेश यात्रा के दौरान वह संयुक्त अरब अमीरात, नीदरलैंड, स्वीडन, नॉर्वे और इटली का दौरा करेंगे। यह यात्रा भारत की वैश्विक रणनीति, आर्थिक हितों और सामरिक साझेदारियों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल मानी जा रही है। इस दौरान ऊर्जा सहयोग, व्यापार, हरित प्रौद्योगिकी, रक्षा, निवेश, नवाचार और वैश्विक सुरक्षा जैसे अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होगी, जिससे भारत की अंतरराष्ट्रीय भूमिका और अधिक मजबूत होने की संभावना है।इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि भारत अपने पारंपरिक मित्र देशों के साथ केवल व्यापारिक संबंधों तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि वह प्रौद्योगिकी, हरित ऊर्जा, रक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, समुद्री सुरक्षा और वैश्विक आपूर्ति शृंखला जैसे क्षेत्रों में दीर्घकालिक रणनीतिक सहयोग को भी विस्तार देना चाहता है। हाल के वर्षों में भारत ने विश्व मंच पर एक भरोसेमंद और संतुलित शक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाई है। यही कारण है कि यूरोप और पश्चिम एशिया के देश भारत को भविष्य के आर्थिक और सामरिक साझेदार के रूप में देख रहे हैं।

हम आपको बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी अपनी यात्रा की शुरुआत संयुक्त अरब अमीरात से करेंगे, जहां वह राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नहयान से मुलाकात करेंगे। दोनों देशों के बीच ऊर्जा सहयोग, निवेश, डिजिटल भुगतान, रक्षा और भारतीय समुदाय के कल्याण जैसे विषयों पर चर्चा होने की संभावना है। भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी लगातार मजबूत हुई है। संयुक्त अरब अमीरात भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है तथा बीते पच्चीस वर्षों में भारत में निवेश करने वाले प्रमुख देशों में शामिल है। दोनों देशों के बीच व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते ने व्यापार को नई गति दी है। ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में भी संयुक्त अरब अमीरात भारत का महत्वपूर्ण सहयोगी है। इसके अलावा भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा दोनों देशों की सामरिक निकटता को और अधिक मजबूत बना रहा है। वहां रह रहे लाखों भारतीय दोनों देशों के सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों की मजबूत कड़ी हैं।

संयुक्त अरब अमीरात के बाद प्रधानमंत्री नीदरलैंड जाएंगे। यह यात्रा भारत और नीदरलैंड के बीच बढ़ते आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी सहयोग को नई दिशा देगी। प्रधानमंत्री वहां के राजा विलेम अलेक्जेंडर, महारानी माक्सिमा और प्रधानमंत्री रोब येटन से मुलाकात करेंगे। दोनों देशों के बीच रक्षा, सुरक्षा, हरित हाइड्रोजन, जल प्रबंधन, सेमीकंडक्टर और नवाचार जैसे क्षेत्रों में तेजी से सहयोग बढ़ रहा है। नीदरलैंड यूरोप में भारत का प्रमुख व्यापारिक साझेदार है और भारत में बड़े निवेशकों में शामिल है। जल प्रबंधन और कृषि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नीदरलैंड की विशेषज्ञता भारत के लिए अत्यंत उपयोगी मानी जाती है। दोनों देश मुक्त और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के समर्थन में भी एक समान दृष्टिकोण रखते हैं।मोदी की स्वीडन की यात्रा भारत और नॉर्डिक देशों के साथ बढ़ते सहयोग को और मजबूत बनाएगी। प्रधानमंत्री गोथेनबर्ग में स्वीडन के प्रधानमंत्री उल्फ क्रिस्टर्सन से वार्ता करेंगे। दोनों देशों के बीच व्यापार, हरित परिवर्तन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उभरती प्रौद्योगिकी, रक्षा, अंतरिक्ष और जलवायु कार्रवाई जैसे क्षेत्रों में व्यापक सहयोग की संभावनाएं हैं। हम आपको बता दें कि स्वीडन की अनेक प्रमुख कंपनियां भारत में सक्रिय हैं और दोनों देशों के बीच नवाचार आधारित साझेदारी तेजी से विकसित हो रही है। भारत और स्वीडन लोकतांत्रिक मूल्यों, सतत विकास और तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में समान सोच रखते हैं। हरित औद्योगिक परिवर्तन और जलवायु संरक्षण के लिए दोनों देशों का सहयोग वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी इसके बाद नॉर्वे जाएंगे, जहां वह तीसरे भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री की नॉर्वे की पहली यात्रा होगी और पिछले तैंतालीस वर्षों में भारत से वहां होने वाली पहली प्रधानमंत्री स्तरीय यात्रा भी मानी जा रही है। नॉर्वे के प्रधानमंत्री योनास गार स्तोरे के साथ होने वाली वार्ता में व्यापार, निवेश, हरित प्रौद्योगिकी और समुद्री अर्थव्यवस्था पर विशेष जोर रहेगा। भारत और नार्वे के संबंध समुद्री सहयोग, हरित ऊर्जा और सतत विकास पर आधारित हैं। भारत-यूरोपीय मुक्त व्यापार समझौते के बाद दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को नई गति मिलने की संभावना है। नॉर्वे का विशाल पेंशन कोष भारतीय पूंजी बाजार में महत्वपूर्ण निवेश कर चुका है। आर्कटिक क्षेत्र, हरित जहाजरानी और समुद्री संसाधनों के प्रबंधन में दोनों देशों का सहयोग भविष्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन इस यात्रा का एक और महत्वपूर्ण पक्ष होगा। इसमें नॉर्वे, स्वीडन, डेनमार्क, फिनलैंड और आइसलैंड के शीर्ष नेता शामिल होंगे। यह मंच भारत और नॉर्डिक देशों के बीच प्रौद्योगिकी, नवाचार, नवीकरणीय ऊर्जा, रक्षा, अंतरिक्ष, सतत विकास और समुद्री अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों में सहयोग को नई रणनीतिक दिशा देगा। वैश्विक आपूर्ति शृंखला को मजबूत बनाने और हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में यह सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।यात्रा के अंतिम चरण में प्रधानमंत्री इटली जाएंगे। प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी और राष्ट्रपति सर्जियो मातारेला के साथ उनकी बैठकें भारत-इटली रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करेंगी। दोनों देश 2025 से 2029 तक की संयुक्त रणनीतिक कार्ययोजना पर तेजी से काम कर रहे हैं। व्यापार, रक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और औद्योगिक सहयोग इसके प्रमुख क्षेत्र हैं। इटली ने चीन की बेल्ट एंड रोड पहल से अलग होकर भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे को समर्थन दिया है, जिससे दोनों देशों की सामरिक निकटता बढ़ी है। रक्षा क्षेत्र में सह-विकास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर जोर दिया जा रहा है। इटली भारत के संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के प्रयासों का भी समर्थन करता रहा है। वहां रह रहा भारतीय समुदाय दोनों देशों के संबंधों को सामाजिक और सांस्कृतिक मजबूती प्रदान करता है।

इस प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह विदेश यात्रा केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की बदलती वैश्विक भूमिका का प्रतीक भी है। यह यात्रा भारत को ऊर्जा सुरक्षा, प्रौद्योगिकी सहयोग, हरित विकास, रक्षा साझेदारी और वैश्विक व्यापार के नए अवसर प्रदान करेगी। साथ ही यह संदेश भी देगी कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख और विश्वसनीय केंद्र बनकर उभर रहा है।

-नीरज कुमार दुबे

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

सच वाणी

**सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं।
दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।**

'बबुआ' ठीक ही तो कहता है सोने में कलयुग रहता है

जीवन समाधान

महाराज वैभव भटेले
(धर्म, अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No. 9303139229

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से यह अपील की है — आने वाले एक वर्ष तक लोग सोना खरीदना बिल्कुल बंद कर दें। पेट्रोल डीजल गैस बचाएं और तेल जरा कम खाएं। देश के मुखिया की इस अपील के बाद गांव गली चौपालों से लेकर सोशल मीडिया पर हड़कंप मचा हुआ है। विपक्ष तो विपक्ष ऐसे आमजन जिन्होंने अरसा बीते सोना खरीदना तो छोड़ो देखा भी नहीं होगा वो भी इस बात को लेकर मैदान में उतर आए हैं। घर में फूटी कौड़ी नहीं लेकिन नाम दौलतराम! इन्होंने भी सोने की खरीदी न करने की अपील का घोर विरोध किया है। जिन्हें हमारे ही पड़ोस के एक बिहारी बाबू ने अपनी भाषा में समझाया और हड़काया। उन्होंने इस बात की हिदायत दी कि तुम दिलेरी से सब्जियां तो खरीद नहीं पाते। जब देखो तब टमाटर और प्याज के रेट सुनकर घबरा जाते। जरा सी महंगाई पर हायतौबा मचाते । तुम्हारी इतनी औकात भी क्या कि तुम सोना खरीद पाते। अरे 'बबुआ' ठीक ही तो कहता है सोने में कलयुग रहता है! ऐसा हमने भागवत पुराण में साधुजी के मुख से सुना है। अरे, भैया आज के जमाने में कठोर श्रम परिश्रम करने वाले सोना तो क्या अपने मनमाफिक आटा भी नहीं खरीद पाते। तो फिर तुम क्यों सोना खरीदी न करने की अपील पर इतनी गर्मागर्मी दिखाते। तुमने सुनी होगी भागवत की कथा जिसमें राजा परीक्षित के शरणागत हुआ कलयुग अपने रहने के लिए कुछ खास स्थान मांगता है। तब उन्होंने हिंसा व्यभिचार जुआ सोने आदि में उसे निवास स्थान दे दिया था। अब जब सोने में कलयुग ही रहता है तो उसके लिए इतना भी क्या हायतौबा मचाना? अरे, मौका है अपने आपको और हम सबको सोने में छिपे कलयुग से बचाना है। इसमें आखिर हमारे 'सरकार' ने क्या गलत बात कह दी। साधु संत फकीर भी तो यही समझाते हैं। अपने सद्विचारों से हमें कलयुग से बचाते हैं। इसलिए इतनी उठापटक मत मचाइए। सालभर की ही तो बात है सोने से अपना मोह हटाइए। हो सकता है तुम्हें इस कलयुग से मुक्ति मिल जाए और तुम्हारे जीवन में सतयुग लौट आए। ऐसा सतयुग जिसमें हर व्यक्ति स्वस्थ सुखी सम्पन्न सत्यवान और चरित्रवान बन जाए।

अपरा एकादशी पर भगवान त्रिविक्रम की पूजा करें

अपरा एकादशी को अचला एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। पुराणों के अनुसार ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी अपरा है। इस दिन भगवान त्रिविक्रम की पूजा की जाती है। इस व्रत के करने से ब्रह्महत्या, परनिंदा, भूतयोनि जैसे निकृष्ट कर्मों से छुटकारा मिल जाता है। इसके करने से कीर्ति, पुण्य तथा धन की अभिवृद्धि होती है। यह व्रत मिथ्यावादियों, जालसाजों, कपटियों तथा ठगों के घोर पापों को मिटाने वाला है। अपरा एकादशी के दिन तुलसी, चंदन, कपूर, गंगाजल सहित भगवान विष्णु की पूजा की जानी चाहिए। कहीं-कहीं बलराम-कृष्ण का भी पूजन करते हैं।

व्रत विधि: एकादशी के दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर स्नानादि से निवृत्त हों और साफ वस्त्र धारण करें। - इसके बाद भगवान विष्णु, कृष्ण तथा बलराम का धूप, दीप, फल, फूल, तिल आदि से पूजा करना चाहिए। - इस पूरे दिन निर्जल उपवास करना चाहिए। - यदि संभव ना हो तो पानी तथा एक समय फल आहार ले सकते हैं। - द्वादशी के दिन यानि पारण के दिन भगवान का पुनः पूजन कर कथा का पाठ करें। - कथा पढ़ने के बाद प्रसाद वितरण, ब्राह्मण को भोजन तथा दक्षिणा देकर विदा करना चाहिए। - अंत में भोजन ग्रहण कर उपवास खोलें।

कथा : प्राचीनकाल में महीध्वज नामक एक धर्मात्मा राजा था। उसका छोटा भाई वज्रध्वज बड़ा ही क्रूर, अधर्मी तथा अन्यायी था। वह अपने बड़े भाई से द्वेष रखता था। उस अवसरवादी पापी ने एक दिन रात्रि में अपने बड़े भाई की हत्या करके उसकी देह को एक जंगली पीपल के नीचे गाड़ दिया। इस अकाल मृत्यु से राजा प्रेतात्मा के रूप में उसी पीपल पर रहने लगा और अनेक उत्पात करने लगा। अकस्मात एक दिन धौम्य नामक ऋषि उधर से गुजरे। उन्होंने प्रेत को देखा और तपोबल से उसके अतीत को जान लिया। अपने तपोबल से प्रेत उत्पात का कारण समझा। ऋषि ने प्रसन्न होकर उस प्रेत को पीपल के पेड़ से उतारा तथा परलोक विद्या का उपदेश दिया। दयालु ऋषि ने राजा की प्रेत योनि से मुक्ति के लिए स्वयं ही अपरा (अचला) एकादशी का व्रत किया और उसे अगति से छुड़ाने को उसका पुण्य प्रेत को अर्पित कर दिया। इस पुण्य के प्रभाव से राजा की प्रेत योनि से मुक्ति हो गई। वह ऋषि को धन्यवाद देता हुआ दिव्य देह धारण कर पुष्पक विमान में बैठकर स्वर्ग को चला गया।

नियम : व्रत के दिन शौचादि से निवृत्त होकर स्नान करना चाहिए। फिर व्रत का संकल्प करना चाहिए। दिन भर काम करते हुए ही भगवान का सुमिरन करते रहना चाहिए। भगवान विष्णु का सुमिरन करते हुए पूजादि में कमी के लिए उनसे क्षमा मांगनी चाहिए। व्रत में फलाहार का प्रयोग किया जा सकता है, ताकि स्वास्थ्य पर कोई विपरीत प्रभाव न पड़े। गर्मियों के दिनों में पानी का सेवन भी खूब करना चाहिए। अपनी सामर्थ्य के अनुसार इस दिन दान आदि भी करना चाहिए। सुबह और शाम के समय, दो बार मंदिर में मत्था टेकने भी जाना चाहिए। इस दिन किसी से गाली-गलोच से बचना चाहिए। विष्णु भगवान की कथा का पाठ भी करना चाहिए। अपनी सामर्थ्य के अनुसार ब्राह्मणों को भोजन भी कराना चाहिए। रात को फलाहार करें तथा दूसरे दिन सुबह भोजन करने से पहले गाय को रोटी भी रखनी चाहिए। इन नियमों का पालन करने से भगवान का आशीर्वाद जरूर मिलता है।

आर्थिक समृद्धि और अटका हुआ धन

यदि आपका पैसा कहीं फंसा हुआ है या व्यापार में लगातार घाटा हो रहा है, तो अपरा एकादशी का व्रत दरिद्रता को दूर कर आय के नए स्रोत खोलता है।

भीषण पापों से मुक्ति

जाने-अनजाने में की गई गलतियां हमारे वर्तमान को प्रभावित करती हैं। यह व्रत उन कर्म बंधनों को काटकर जीवन में हल्कापन लाता है।

करियर और सामाजिक प्रतिष्ठा

नौकरी में प्रमोशन या समाज में सम्मान की कमी महसूस हो रही है, तो इस व्रत के प्रभाव से व्यक्ति का प्रभाव मंडल मजबूत होता है।

पितृ दोष और ग्रह शांति

कुंडली में शनि का प्रभाव हो या राहु-केतु की बाधा, विष्णु आराधना इन सभी नकारात्मकताओं को शांत करती है।

पूजा की मुख्य प्रक्रिया

वेदी स्थापना: एक चौकी पर पीला कपड़ा बिछाकर भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित करें।
अभिषेक: यदि दक्षिणावर्ती शंख हो, तो उसमें दूध और केसर डालकर भगवान का अभिषेक करें।
नैवेद्य: भगवान को पीले फल, पीली मिठाई और सबसे महत्वपूर्ण तुलसी दल (तुलसी का पत्ता) अर्पित करें। याद रखें, बिना तुलसी के विष्णु पूजा अधूरी है।
मंत्र जाप: रुद्राक्ष या तुलसी की माला से 108 बार इस मंत्र का जाप करें: ऊं नमो भगवते वासुदेवाय

व्रत के नियम

इस दिन पूर्ण उपवास रखें। यदि स्वास्थ्य अनुमति न दे, तो फलाहार (दूध, फल) ले सकते हैं।
चावल, प्याज, लहसुन और तामसिक भोजन का पूरी तरह त्याग करें। रात्रि जागरण का विशेष महत्व है; भजन-कीर्तन में समय बिताएं।

पारण (व्रत का समापन)

14 मई की सुबह मुहूर्त के भीतर ही व्रत खोलें। पारण से पहले ब्राह्मणों या जरूरतमंदों को दान (अन्न, वस्त्र, जल) अवश्य दें।

क्या करें और क्या न करें

तुलसी के पौधे के पास घी का दीपक जलाएं,चावल का सेवन बिल्कुल न करें
'विष्णु सहस्रनाम' का पाठ करें,किसी की बुराई या निंदा न करें
मौन रहने का प्रयास करें,क्रोध और वाद-विवाद से बचें
दान के लिए सामर्थ्य अनुसार संकल्प लें,दिन के समय सोने से बचें

वर्ग पहेली 2851

बायें से दायें:- ...
ऊपर से नीचे:- ...

पिछली पहेली का उत्तर

सचएक्सप्रेस पंचांग

ज्योतिषाचार्य
श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

गुरुवार 14 मई 2026
सूर्योदय- प्रातः 5:39 बजे
सूर्यास्त- शाम 6:44 बजे
चंद्रोदय - 3:33
चंद्रास्त - 4:31
शक संवत् - 1948 पराभव
विक्रम संवत - 2083 रोद्र
पूर्णिमांत महीना- ज्येष्ठ
पक्ष - कृष्ण
तिथि - द्वादशी सुबह 7:46 तक पश्चात् त्रयोदशी।
नक्षत्र - प्रीति शाम 5:57 तक पश्चात् आयुष्मान।
योग - वृद्धि रात्रि 8:41 तक पश्चात् ध्रुव
करण - तैतिल दिन 11:25 तक पश्चात् गर
सूर्य राशि - मेष
चंद्र राशि - मीन
शुभांक 5-9-4

मेष

दिन अनुकूल। पारिवारिक रिश्तों में मजबूती। आर्थिक समृद्धिशाली वातावरण। शिवजी को गुड़हल का फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 1, शुभ रंग - लाल।

वृष

जीवन को संतुलित रखने में सक्षम। परिवार में खुशियां बरसेगी। मन मस्तिष्क ऊर्जावान। शिवजी को सफेद फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग - सफेद।

मिथुन

अपनी प्रतिभा को निखारने का वक्त। परिवार में आपसी रिश्तों में गहरापन। रचनात्मक कार्य करने का मन होगा, जिससे मन मस्तिष्क तरोताजा होगा। शिवजी को लाल गुलाब अर्पित करें। शुभ अंक - 2, शुभ रंग- हरा।

कर्क

भावनात्मक रूप से अच्छा वातावरण। आपसी रिश्तों में मजबूती। किसी पर भरोसा आंख मूंद कर न करें। शिवजी को सफेद फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 1, शुभ रंग- सफेद।

सिंह

दिन शुभ। वाणी पर नियंत्रण आवश्यक। अन्यथा बनते काम बिगड़ सकतें हैं। खान पान का ध्यान रखें। शिवजी को लाल फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग- लाल।

कन्या

दिन उत्तम। गोचरीय ग्रह अच्छी स्थिति में। योजनाबद्ध तरीके से काम करें। नौकरीपेशा वर्ग के कार्य क्षेत्र में परिवर्तन के योग। शिवजी को नीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- हरा।

तुला

दिन शुभ अनुकूल। आलस्य को त्याग कर योजना के अनुसार काम करें। व्यापारी वर्ग के लिए सामान्य दिन परिवार का वातावरण सुखद। शिवजी को सफेद फूल अर्पित करें। शुभ अंक - 5, शुभ रंग- सफ़ेद।

वृश्चिक

दिन सामान्य। आलस्य की वजह से काम में बाधाएं बन सकती है। व्यापारी वर्ग थोड़ा सजगता से काम लेवे। नौकरीपेशा जातकों के जीवन में बदलाव सम्भव। शिवजी को लाल फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- लाल।

धनु

दिन मिश्रित प्रभाव वाला, व्यवसाय की दृष्टि से दिन सामान्य। परिवार में सुख-समृद्धि का वातावरण। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने के योग। शिव जी को पीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 4, शुभ रंग- पीला।

मकर

दिन शुभ। पर व्यापारी वर्ग थोड़ा सतर्क रहें। स्वभाव थोड़ा चिड़चिड़ा, क्रोधी हो सकता है। धैर्य से काम लेवे। शिवजी को नीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग - जामुनी।

कुंभ

परिवार में पुरानी चली आ रही कुछ गलतफहमीया आज दूर हो सकती है। वैवाहिक जीवन में शुभता। शिवजी को नीले फूल अर्पित करें। शुभ रंग- 9, शुभ रंग- भूरा।

मीन

भाग्य प्रबल। अनावश्यक खर्च हो सकता है। थोड़ा नियंत्रण में रहें। स्वास्थ्य का थोड़ा ध्यान रखें। संतान क्षेत्रीय उत्तम योग। शुभ अंक- 6, शुभ रंग - पीला।

ग्रह स्थिति
सूर्य- मेष राशि में, ता. 15 के सुबह 10:08 से वृष राशि में। मंगल- मीन राशि में,ता. 11 के दिन 12:04 से मेष राशि में। बुध- मेष राशि में, ता. 14 की रात्रि 12:07 से वृष राशि मे, ता. 29 की सुबह 10:06 से मिथुन राशि में। गुरू- मिथुन राशि में। शुक्र - वृष राशि में, ता.14 की सुबह 8:39 से मिथुन राशि में। शनि- मीन राशि मे। राहु- कुंभ राशि में। केतु- सिंह राशि में।

दिशा शूल
दक्षिण दिशा में यात्रा वर्जित है। अति आवश्यक होने पर दही का सेवन कर घर से निकलें।

चौघड़िया
शुभ प्रातः 6:00-7:30 तक
चर सुबह 10:30-12:00 तक
लाभ दिन 12:00-1:30 तक
अमृत दिन 1:30-3:00 तक
शुभ अपराह्न 4:30-6:00 तक

अभिजीत मुहूर्त
सुबह 11:55 से दिन 12:20 तक!

सर्वार्थ सिद्धि योग
ता. 4 को सूर्योदय से सुबह 8:24 तक। ता.8 की शाम 5:54 से ता. 9 की रात्रि 7:27 तक। ता. 12 को रात्रि 9:10 से रात्रि अंत तक। ता. 14 की सूर्योदय से ता. 15 की शाम 6:57 तक। ता. 18 सूर्योदय से रात्रि अंत तक। ता. 21 को सूर्योदय से रात्रि अंत तक। ता.27 को सूर्योदय से सुबह 7:52 तक।

पुष्य नक्षत्रः ता. 21 को सुबह 9:40 से ता. 22 के सुबह 8:26 तक।
त्रिपुष्कर योग - ता. 2 को रात्रि 11:16 से ता. 3 की प्रातः 5:54 तक।

रवि योग
ता.7 की शाम 6:50 से ता. 8 की रात्रि 9:24 तक। ता. 19 की सुबह 8:45 से ता. 20 की प्रातः 6:15 तक। ता. 24 की रात्रि 2:13 से ता. 27 की प्रातः 6:00 तक। ता. 29 की सुबह 10:42 से ता.30 के दिन 1:24 तक।

अमृत सिद्धि योगः ता. 18 को दिन 2:24 से रात्रि अंत तक ।ता . 21 की सुबह 9:40 से रात्रि अंत तक।